जल अधिकार जीवन आधार

अप्रैल से जून, 2021 अंक 2

@PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN @PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN @PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN @PARMARTHSAMAJSEVISANSTHAN

सम्पादकीय

कोरोना की दूसरी लहर इतनी अधिक खौफनाक थी कि जिसे सोचकर अब भी डर लगने लगता है, कोरोना की दूसरी लहर में हम सबने किसी ना किसी अपने को खोया है। आजादी के बाद से अबतक किसी बीमारी को लेकर इतनी खौफनाक स्थिति नहीं देखी थी जिस बीमारी के कारण हर तरफ हाहाकार मचा हुआ था।

ऑक्सीजन की किल्लत, अस्पतालों में बेडों की कमी उचित इलाज ना मिल पाने के कारण हम सबने अपनों को प्राण त्यागते हुए देखा है।

भय का इतना अधिक माहौल था कि लोग रात में भी नहीं सो पा रहे थे, पूरी तरह से व्यवस्थाऐं चरमरा गई थी। बेबसी और लाचारी में लोगों के सामने ईश्वर का ही सहारा था जिसके लिए लोग ईश्वर से दुआ मांग रहे थे। अगर स्वस्थ्य हो जाते थे वों ईश्वर को धन्यवाद देते थे और जो जिन परिवारों के सदस्य इस बीमारी का शिकार हो जाते थे, वह सदमें में चले जा रहे थे।

ऐसे विकट हालात में सामाजिक संगठन परमार्थ समाज सेवी संस्थान ने कोरोना काल में व्यापक जागरूकता फैलाने का काम किया। परमार्थ संस्था ऐसे विकट समय में भी जरूरतमंद लोगों को उनकी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास कर रही थी।

जिसके तहत राशन किट, भोजन, सेनीटेशन किट, मास्क आदि का वितरण किया गया। बुन्देलखण्ड के झांसी, ललितपुर, जालौन, खजुराहों, निवाडी में 42 ऑक्सीजन कन्सट्रेटर उपलब्ध कराकर मानव सेवा का उदाहरण प्रस्तुत किया। वही दूसरी तरफ कोरोना के कारण जो मजबूरी में शहर छोडकर गांव आ गये थे उन्हें रोजगार उपलब्ध कराने काम बदले अनाज उपलब्ध कराने हेतु श्रमदान कराये गये। जिसके तहत गांव के लोगों ने इन रोजगार के अवसरों के साथ ही अपनी परसम्पत्तियों को ठीक करने का कार्य किया।

जल संरक्षण संरचनाओं को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। गांव में कम्युनिटी किचन गार्डन का निर्माण किया गया वही जरूरतमंद किसानों को रवी और जायद के बीज उपलब्ध कराये। जिससे शहर छोडकर गांव आये प्रवासी मजदूरों ने खेती करके अपनी आजीविका सुनिश्चित करने का प्रयास किया है। वहीं गांवों में किचन गार्डन में तुलसी एवं अन्य पौधें रोपकर कोरोना जैसी महामारी से लडने के लिए इम्यूनिटी बढाने का कार्य किया गया है। परमार्थ संस्था का प्रयास जहां एक ओर गांवों को कोरोना मुक्त बनाने का प्रयास स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर करने का है। इसी तरह के प्रयास को सभी गांवों में करने की जरूरत है। कोरोना काल में कई गांवों ने मिलकर इस महामारी के प्रभाव को रोकने की दिशा में कारगर हस्ताक्षेप किया। इन प्रयासों से हम सब को सीखने की आवश्यकता है और इन प्रयासों को चारों तरफ फैलाने का प्रयास किया जाये, हम सब मिलकर ही कोरोना जैसी महामारी का सामना कर सकते है। इस तरह के कई उदाहरण देश में देखने को मिल रहे है। कई जगहों पर निगरानी समितिओं ने बहुत बेहतर प्रयास कोरोना से लडने में किये है। यह लोग सम्मान के प्राप्त है।

डॉ संजय सिंह
सचिव, परमार्थ समाज सेवी संस्थान

OXYGEN CONCENTRATOR BANK

विश्व पृथ्वी दिवस पर संस्थान के द्वारा किया गया बेवीनार का आयोजन

पृथ्वी को बचाने के लिए लोग लगातार अनेक प्रयास कर रहे है। वर्ष 1970 से 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस के रूप में मनाया जाता है, इस दिन लोग पृथ्वी के संरक्षण पर बात करते है। अपने कार्यो से कैसे कम से कम पृथ्वी को नुकसान पहुचाये इसके बारे में सोचा जा जाता है। इस वर्ष पृथ्वी दिवस की थीम **"Restore Our Earth"** है. जिसका अर्थ है, हमारी पृथ्वी को पुनर्स्थापित करना हमारा कर्तव्य है क्योंकि हम इस पर रहते हैं. क्योंकि यह कोई विकल्प नहीं बल्कि एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसी को लेकर परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा पृथ्वी दिवस के अवसर पर बेवीनार का आयोजन किया गया। जिसमें सामाजिक कार्यकर्ताओं, विषय विशेषज्ञों के द्वारा पृथ्वी के संरक्षण को लेकर अपने-अपने विचार रखे।

वेबीनार के मुख्य वक्ता श्री राजाबाबू सिंह अपर पुलिस महानिदेशक, मध्य प्रदेश ने कहा कि जमीन की गुणवत्ता लगातार खराब होती जा रही है। उपजाऊ मिटटी की परत धूल में तब्दील होती जा रही है। नदी और तालाब उत्सवों से नहीं बचेगे बल्कि उनको बचाने के लिए जमीनी स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है। कार्बन के प्रभाव को कम करने के लिए ऑक्सीजन के उत्पादन को बढाना होगा। को. विड के समय जिस तरह से ऑक्सीजन की किल्लत मची हुई है यह कहीं ना कहीं मानवीय भूल ही है। हम सब जानते है कि ऑक्सीजन का स्त्रोत वृक्ष है, जैसे-जैसे वनों का विनाश होगा वैसे-वैसे समाज को ऑक्सीजन की कमी का सामना करना पडेगा। प्रोफेसर अनुपम सराफ ने कहा कि मानवीय स्वा. र्थ के कारण मृदा का लगातार ह्रास हो रहा है, जिसके लिए वातावरणीय आपातकाल लागू करने की आवश्यकता है। पृ. थ्वी दिवस एक दिन नहीं बल्कि हर दिन मनाया जाना चाहिए। वेबीनार में उपस्थिति माया जे० मदान ने कहा कि स्कूलों में बच्चों को वृक्षारोपण अनिवार्य कर दिया जाये और इसको पाठयक्रम से भी जोड दिया जाये। समाज के सभी वर्गो को मिलकर पर्यावरण संरक्षण पर कार्य करना होगा। पूर्व वनसं. रक्षक पी०के० मिश्रा ने कहा कार्बन क्रेडिट को कम करने के लिए किसानों के द्वारा किये जा रहे प्रयासों को मान्यता मिलना चाहिए एवं वन अधिनियम 1980 को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। बाबा भीमराव

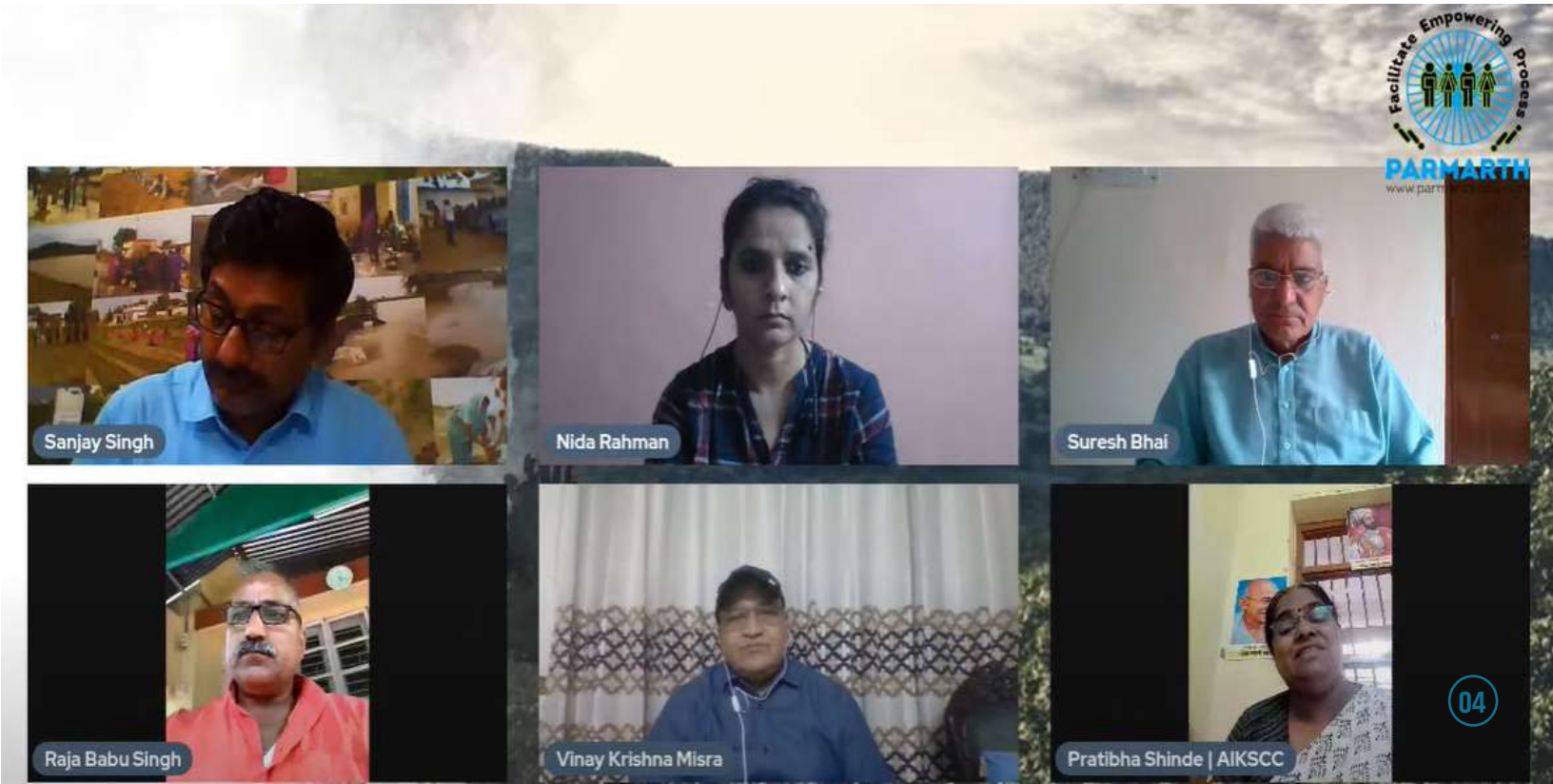

वेबीनार का संचालन करते हुए डॉ० संजय सिंह ने कहा कि परमार्थ संस्थान के द्वारा पर्यावरण के संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करने के लिए लगातार वेबीनार एवं अन्य माध्यमों से प्रयास कर रहा है। पृथ्वी को बचाने के लिए समाज के सभी वर्गो को आगे आने की आवश्यकता है।

अम्बडेकर विश्वविद्यालय के डॉ० डी० पी० सिंह ने कहा कि पर्यावरण के लिए बडी-बडी बातें नहीं बल्कि असल में कार्य करने की आवश्यकता है। इसके लिए प्रत्येक वर्ग को संवे. दित करने की आवश्यकता है। प्रति व्यक्ति वृक्षों की संख्या बढायी जाये। मुम्बई की वरिष्ठ पत्रकार कंचन श्रीवास्तव ने कहा कि कोरोना काल में और अधिक कचरा बढ रहा है लोग प्लास्टिक का उपयोग कर रहे है इस पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता डॉ० इन्दिरा खुराना ने कहा कि असमता को खत्म करने की आवश्यकता है, पर्यावरण से सम्बधित वास्तविक तथ्यों को सामने लाने की जरूरत है।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा वेबीनार का आयोजन किया गया। बेवीनार को सम्बोधित करते हुए भारतीय वन सेवा के पूर्व वन संरक्षक वी० के० मिश्रा ने कहा कि आज से 50 साल पहले गंगा के पानी में हर जगह डॉल्फिन नजर आती थी जो नदी के शुद्ध जल का प्रतीक थी, लेकिन आज उसी नदी में डॉल्फिन लगभग खत्म होने की कगार पर है। पर्यावरण के खत्म होने के और भी कई कारक है हमें उनको प्राथमिकता देते हुये उनके बचाव हेतु काम करना होगा। जिसके लिए नदियों के किनारे रिजर्व फॉरेस्ट को अब पुनर्जीवत करना होगा। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण का उदाहरण देते हुए कहा कि उनके द्वारा कासगंज में चंगनपुर घटियारी जो 4 लाख हजार पौधें लगाये गये थे वह आज एक बहुत घने जंगल के रूप में परिवर्तित हो गये। वह आज पूरे लगे है। सरकार के द्वारा इसी कासगंज मॉडल की तर्ज पर गंगा किनारे के जिलों में इसी तरह से वनों को लगाने की योजना बनायी थी।

वन संरक्षण को लेकर महाराष्ट्र में लडाई लडने वाली वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता प्रतिभा सिद्धे ने कहा कि पर्यावरण दिवस पर हमे अपनी सरकारों को बताना होगा कि जो तीन कानून आये है उससे पूंजीपतियों का राज शुरू हो जायेगा, जिससे पर्यावरण पर बहुत विपरीत प्रभाव पडेगा। अगर हमे पर्यावरण को संतुलित रखना है तो हमें हरित क्रांति से जुडना होगा। सरकार के द्वारा विकास के कार्य तो किये जाते है लेकिन उनसे होने वाले विनाश को कभी नहीं देखा जाता। उन्होंने कहा कि जो लोग वनों को अपना बाप एवं माटी को अपनी मां मानते है, उनकों नदियों से लेकर सागर व मिटटी से लेकर हवा के संरक्षण में अहम भूमिका निभानी होगी तभी पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता है।

हिमालय को बचाने के लिए लगातार प्रयास कर रहे वरिष्ठ पर्यावरणविद सुरेश भाई ने कहा कि हिमालय इस समय बहुत संवेदनशील है, और इन सबसे बडी समस्या इसकी बर्फ पिघलना है, जो बहुत तेजी से पिघल रही है, जहां से गंगा निकलती है वह गौमुख अब लगभग सूख चुका है। वही दूसरी ओर पहाड काटकर 18 से 24 मीटर चौडी सडके बनायी जा रही है जिससे लगातार पहाडों को नुकसान हो रहा है। सरकार मैदानी इलाकों के अनुसार नीतियां बनाती है और पहाड पर भी इन्हीं नीतियों के द्वारा कार्य कर रही है, जिससे पहाडो से फायदा कम एवं नुकसान ज्यादा हो रहा है। उन्होंने कहा कि हिमालय विशेष तौर पर अपने वनों के लिए जाना जाता रहा है। यहां उत्तराखण्ड के भू-भाग के 45 प्रतिशत पर वन पाये जाते है। हिमालय से निकलने वाली नदियां 50 करोड लोगों को पानी देती है।

सीमा सुरक्षा बल के महानिदेह्लाक, भारतीय पुलिस सेवा के वरिद्गठ अधिकारी राजा बाबू सिंह ने कहा कि अभी वह असम के चूराचांदपुर में है यहां पर जिस तरह से लोगों के द्व ारा काफी बडे पैमाने पर झूम खेती की जा रही है। जैसे-जैसे सैकडों सालों से खडे वन काटे जा रहे है वैसे-वैसे पर्यावरण का ह्रास हो रहा है। पर्यावरण को बचाने के लिए हमें स्थानीय जैव विविधता को संरक्षित करना होगा। इसके लिए हमे वोकल फॉर लोकल से हमे जुडना होगा। वरिद्गठ पत्रकार निदा रहमान ने कहा कि बक्सवाहा के जंगल को काटकर बुन्देलखण्ड को रेगिस्तान में बदलने की योजना है। बक्सवाहा के जंगलों को बचाने के लिए सभी को एक साथ आना होगा। बुन्देलखण्ड की सांसे छीनने का काम हो रहा है।

जल जन जोडो अभियान के राष्ट्रीय समन्वयक संजय सिंह ने कहा लोग भले ही अभी पर्यावरण संकट को भुलाकर अपने निजी स्वार्थो के लिए पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हों लेकिन जल्द ही इसका असर उन निजी स्वार्थो को खत्म कर देगा। हमने कोरोना की दूसरी लहर में ऑक्सीजन की भयानक कमी को देखा है अगर हमने पर्यावरण संरक्षण का ध्यान नहीं रखा तो हमें भी आगामी वर्षो में बिना बीमारी के कृत्रिम ऑक्सीजन के साथ जीना होगा। भारत में प्रति व्यक्ति पेडों की संख्या को बढाना होगा। इसके साथ ही संस्थान के द्व ारा झांसी के पाली, परसर, मवई, विरगुवां, गढमऊ, रूद्रक. रारी, मानपुर, बण्डा, चमराऊआ, सहित **2** दर्जन गांवों में वृहद वृक्षारोपण का किया गया। इसमें ग्रामीणों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक भी किया गया।

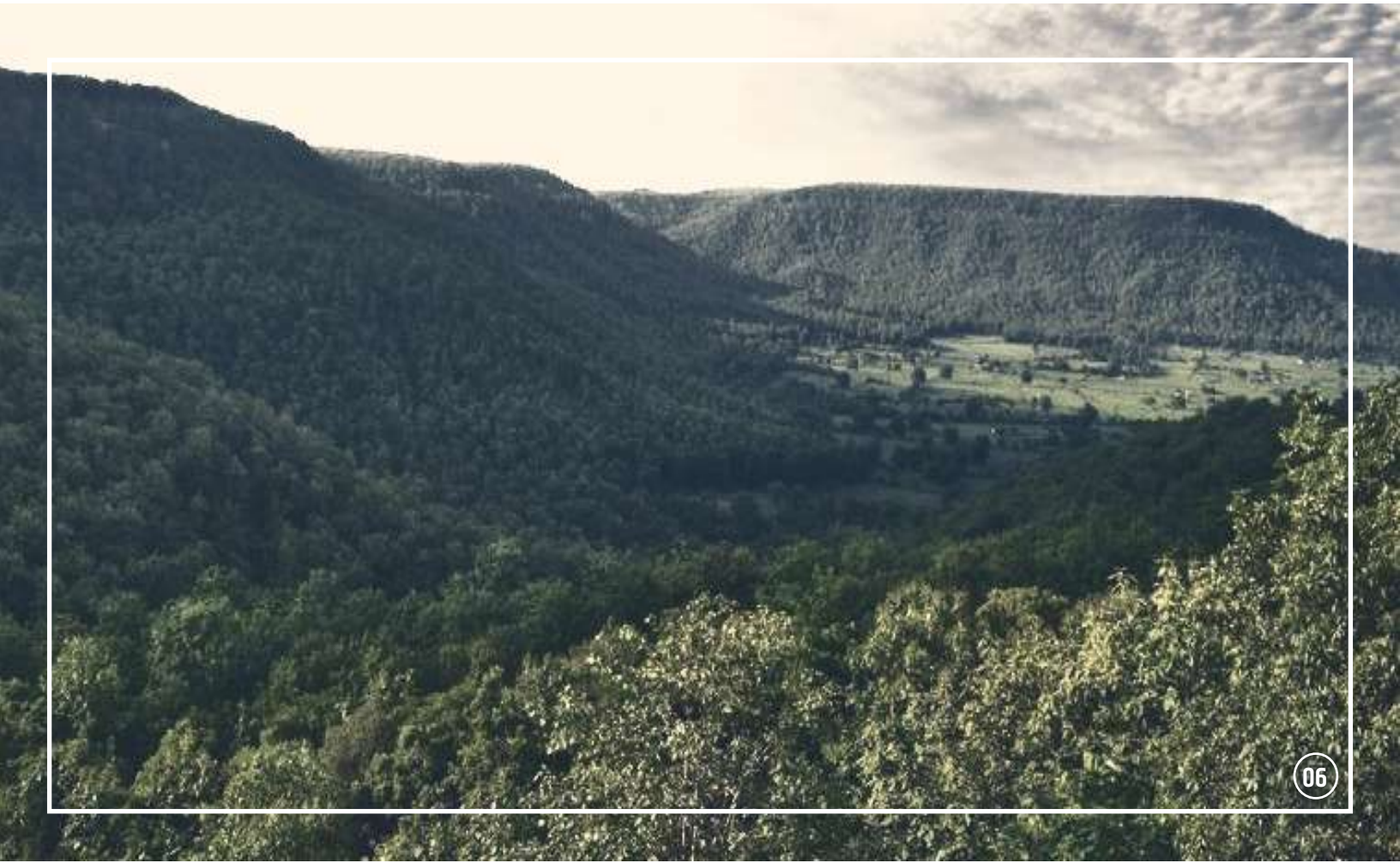

श्रमदान से ठीक हुयी म्यांव गांव की सडक

झांसी। बुंदेलखंड एक सूखा ग्रसित क्षेत्र है और गरमी के मौसम में तो यहां जल संकट आम बात है। क्षेत्रवासियों को पानी के लिए ना जाने कितनी दूर जाना पडता है। समस्या यह भी है कि हम लोग वर्षा के जल का संचयन नहीं करते। वर्षा का जल यूं ही बर्बाद चला जाता है। परमार्थ समाजसेवी संस्थान के पानी जागरूकता अभियान के बाद अब लोग काफी हद तक पानी संरक्षण व संचयन के तरीके समझ चुके हैं। वे अब जल स्तर को बढाने के लिए लगातार प्रयासरत हैं। संस्थान की तरफ से लगातार पानी पंचायत द्वारा जल साक्षर किया जा रहा है।

तालबेहट से **13** किमी दूरी पर स्थित है गांव म्यांव। जिला ललितपुर के ब्लॉक तालबेहट के अन्तर्गत है। गांववासियों की आमदनी का स्त्रोत कृषि के अलावा मजदूरी है। जैसा कि ज्ञात है कि यह गांव बुन्देलखण्ड क्षेत्र की सीमा के अंदर है, किसान यहां कृषि तो करते हैं पर सिंचाई और बारिश की समस्या के कारण अधिकांश फसल खराब हो जाती है। ज्यादातर लोग परिवार सहित पलायन कर गांव से जा चुके थे। बचे जैसे तैसे जीवन निर्वाह कर रहे थे। पानी की आपूर्ति के लिए भी यहां एक तालाब है। जो सिंचाई के लिए भी इस्तेमाल होता है। म्यांव के अलावा आस-पास के गांव के लोग भी इस पर आश्रित रहते हैं। इस तालाब के बगल से एक सडक जाती है जो कि पांच गांव को जोडती है और शहर से भी गांव को जोडती है। गांव की यह सडक गांववासियों के लिए मुख्य सडक है।

बात यहां गांव की हो रही है। यहां सडकें शहरों की ही दुरूस्त नहीं हैं गांव की तो हालत और भी जर्जर थी। उस सडक पर तालाब का पानी आ जाता था। आने जाने वाले काफी हद तक कीचड से खुद को नहीं बचा पाते थे। यदि इन सब से बचना है तो फिर दूसरा रास्ता चुनिए जो 5 किमी लम्बा है। तालाब फूटा होने के कारण ना तो तालाब में पानी बचता था ना ही सडक सुरक्षित थी। तालाब गहरा भी कम था और बहुत जगहों से टूटा हुआ।

यहीं कोरोना ने भारत में कदम रख दिया। पूरे देश मे लॉकडाउन की स्थिति बन गई। मन में कोरोना के बारे में अजीबो गरीब भ्रांतियां फैली हुई थी। पालयन कर बडे शहरों में बस चुके लोग वापस घरों को लौट आए। बेरोजगारी और खौफ का आलम फैला हुआ था। गांव के कुछ लोग परमार्थ के साथ जुडे हुए थे। पानी को संरक्षित रखने के कार्य में परमार्थ समाज सेवी संस्थान हमेशा ही करती है। म्यांव के काफी लोग भी संस्था से जुडकर पानी को बचाने के काम में लगे हुए थे। देशबंदी ने जब लोगों को त्रस्त कर दिया और लोग दाने दाने के लिए कर्ज के मोहताज होने लगे। संस्था ने तब एक परियोजना की शुरूआत की।

7 दिन श्रमदान कार्य करने बाद लोगों के चेहरों पर खुशी व संतुष्टी के भाव देखने को मिले।

परमार्थ समाज सेवी संस्थान की कोविड **19** राहत परियोजना के तहत गांव के उन लोगों को रोजगार दिया जो राशन के तक के लिए कर्ज के मोहताज थे। उन सभी गांव में पानी समस्या तो आम है ही साथ ही साथ सडकों की हालत भी जर्जर रहती है। कोरोना काल में काम से निकाले गए, पलायन कर जा चुके वापस आए मजदूर व महिलाओं को इस परियोजना के तहत **7** दिन का श्रमदान कार्य दिया गया। **7** दिन तक तालाब का गहरीकरण कर उस तालाब को करीब तक फुट गहरा किया गया। गहरीकरण से मिली मिट्टी का प्रयोग उस सडक को सही करने में किया गया जो ना जाने कबसे जर्जर हो रखी। लोगों द्वारा परमार्थ के सहयोग से किया गया यह कार्य सराहनीय व प्रेरणीय है।

म्यांव में सुम्मेर सहरिया अपनी पत्नी व चार बेटियों के साथ रहते हैं। मजदूरी करके वे अपने परिवार का भरण पोशण किया करते थे। उनकी बच्चियों के जन्म के समय उनको अपनी पत्नी को अस्पताल ले जाने में काफी परेशानी का सामना करना पडा था। कोरोना काल के वक्त मजदूरी से भी हाथ धो बैठे थे धीरे धीरे थोडा बहुत जुडा रखा पैसा भी खत्म हो गया। अब उनकी पत्नी फिर से गर्भवती थीं। इसी बीच उन्होनें परमार्थ के **7** दिन के श्रमदान परियोजना के बारे में सुना। उन्होने भी फैसला कर लिया कि वे भी श्रमदान का हिस्सा बनेंगे। इससे आर्थिक सहायता भी मिलेगी । सडक भी सही हो जाएगी। बच्चे के जन्म के समय पत्नी को अस्पताल ले जाते वक्त कोई समस्या नहीं आएगी। ये सब समस्याएं इस परियोजना के तहत काफी हद तक सही हो गई।

7 दिन श्रमदान कार्य करने बाद लोगों के चेहरों पर खुशी व संतुष्टी के भाव देखने को मिले। इस परियोजना ने एक साथ उनकी **3** समस्याओं को हल कर दिया। पहली समस्या को. रोना काल में मजदूरी ना मिलने की वजह से राशन पानी की समस्या। दूसरा तालाब के कम गहरा व जगह जगह फूटा हा. `ने के कारण जल्दी सूख जाने की समस्या। तीसरा तालाब के फूटने की वजह से उसका पानी सडक पर आ जाता था जि. ससे सडक पूरी तरह खराब हो चुकी थी। इन सभी समस्याओं का समाधान परमार्थ द्वारा एक परियोजना के अन्तर्गत कर दिया गया।

पंचायत चुनाव में जल सहेलियों ने दिखायी अपनी तागत

बुन्देलखण्ड झांसी। जल सहेलियां हमेशा से ही अपने गांव की पानी की समस्या के समाधान के लिए काम करती रही है, अब वह पंचायत चुनाव में जीतकर गांव की अन्य समस्याओं पर भी काम करना चाहती है। इसके लिए १६ जल सहेलियों के द्वारा ग्राम प्रधान एवं बीडीसी पद हेतु नामाकंन किया है।

खजुराहा बुजुर्ग गांव से चुनाव लड रही वती ने कहा कि उन्होने पांच प्रमुख विषयों को लेकर पंचायत घोषणा पत्र तैयार किया गया था। जिसके अनुसार अपने गांव को जल संकट मुक्त बनाना, प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण एवं उपयोग, महिला हिंसा की रोकथाम एवं गांव की प्रत्येक बच्ची को गुणवत्तापरक शिक्षा दिलाना, सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता स्थापित कराना जैसे प्रमुख घोषणाओं के साथ वह गांव में वोट मांग रही थी। इन मांगों को उन्होंने पंचशील सिद्धांत का नाम दिया। साथ ही पंचायत चुनाव लड रही जल सहेलियों ने अपने गांव में वोट खरीदने और शराब बांटने के विरूद्ध अपना चुनावी अभियान शुरू किया था। अभियान की राज्य संयोजक शिवानी ने कहा पित्तृसत्तात्मक समाज होने से महिला प्रधान केवल नाम की प्रधान होती है, सभी काम प्रधानपति के द्वारा किये जाते हैं। ऐसे में स्वयं जल सहेलियों के द्वारा प्रधानपति मुक्त पंचायत बनाने हेतु पंचायत चुनाव लडा।

प्रधान पद हेतु – वती खंगार खजुराहा बुजुर्ग, रानू यादव महेषगढ, बजरंगगढ, बडौरा, राजकुमारी, सतगुरू कोटि, गीता मानपुर, राजकुमारी बदनपुर, शारदा देवी गनेषगढ, सावित्री बाजना, कांति देवी हरपुरा, राजेष्वरी डिमरौनी, जयदेवी गढमऊ

बीडीसी पद हेतु – मीरा देवी सिमरावारी, मीना सिमरावारी, ज्योति बमेर, ममता इम. लिया, मंजू रजक खैरा, मीरा खजुराहा बुजुर्ग

कोरोना काल में श्रमिकों की स्थिति

श्रमिक दिवस के अवसर पर करना परमार्थ समाज सेवी संस्थान द्वारा कोरोना काल में मजदूरों की चुनौती विषयक वेबीनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट के प्रोफेसर विनोद शंकर सिंह ने कहा कि कोरोना काल में मजदूरों को सामा. जिक सुरक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से अधिक से अधिक मदद पहुंचाई जाए। कोरोना के इस दूसरी लहर में मजदूरों की हालत बहुत अधिक खराब है उनकी क्रय शक्ति बहुत अधिक प्रभावित हुई है। मजदूरों को ठीक से भोजन नहीं मिल पा रहा है जिसके कारण उनकी प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो रही है जिससे वे और अधिक बीमार हो रहे हैं। आमदनी के जरिए कम होने के कारण उन्हें ठीक से पोषण नहीं मिल पा रहा है। जिसका प्रतिकूल प्रभाव उनकी सेहत पर पड रहा है। मजदूरों के पास इलाज कराने के लिए पैसे नहीं है। गेहूं की कटाई में बडे पैमाने पर हार्वेस्टर का उपयोग किया जाने लगा है जिसने मजदूरों की मजदूरी छीनी है । इसके लिए सरकार को नगद सहायता श्रमिकों को देनी चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सामाजिक कार्यकर्ता डॉ० लेनिन रघुवंशी ने कहा मजदूरों की सेहत को ठीक रखने के लिए उन्हें पोषित आहार देने की आवश्यकता है। इस तरह का प्रयास वह अपने इलाके में कर भी रहे हैं। वरिष्ठ पत्रकार अनिल शर्मा ने कहा गांव के स्तर पर मजदूर रजिस्टर बनना चाहिए, साथ ही उनके लिए चलाई जा रही योजनाओं का लाभ उन्हें दिलाया जाना चाहिए। पिछले २ वर्षों से मजदूर बहुत अधिक परेशान हैं। इस बीच में उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अधिक खराब हुई है। स्तम्भकार रूबी सरकार ने कहा की सरकार ने जो योजना शुरू की है उसका लाभ अधिक से अधिक गांव में लोगों को मिले इसके लिए विशेष प्रयास करने की जरूरत है। अभी तो सभी लोग कोरोना से प्रभावित है, आगे चलकर आबादी के एक बहुत बडते हिस्से को जीवन यापन के लिए आर्थिक मदद की जरूरत होगी।

परमार्थ के प्रमुख संजय सिंह ने कहा कि मजदूरों के लिए कोरोना सबसे बडती आपदा के रूप में आया है। इस महामारी से सबसे अधिक यही वर्ग प्रभावित है। अभी तो हम सब इस महामारी से निपटने में लगे हुए हैं लेकिन आगे चलकर हमारे सामने आबादी के बहुत बडते हिस्से को जिनकी आजीविका प्रभावित हुई है उनको सहयोग करने की जरूरत होगी। पिछली बार के कोरोना और इस बार की दूसरी लहर में बहुत अंतर है पिछले बार बहुत अधिक सामाजिक संगठन धार्मिक संस्थाएं, राजनीतिक दल सभी प्रवासी मजदूरों की मदद के लिए आगे आए थे। इस बार उस तरह का माहौल दिखाई नहीं दे रहा है। लोग बहुत अधिक डरे हुए हैं। डर के कारण वह मदद के लिए आगे नहीं आ रहे हैं। जिसके कारण मजदूर वर्ग और अधिक संकट में है। पंचायत चुनाव होने के कारण मनरेगा में काम नहीं मिल पाया। सामाजिक कार्यकर्ता शिवमंगल ने कहा की मौसमी मजदूरी 2 साल से लगातार प्रभावित हो रही है। बुन्देलखण्ड में कार्य करने वाले मानवेंद्र सिंह ने कहा कि इस समय मजदूरों के सामने भोजन और पीने के पानी की भी समस्या है। बच्चों को इलाज नहीं मिल पा रहा है बच्चों की हालत बहुत अधिक खराब है। झांसी क्षेत्र में कार्य कर रहे सतीश चन्द्र ने कहा कि एक तरफ मशीनीकरण के कारण रोजगार के अवसर घटे हैं, वहीं दूसरी तरफ किए गए काम का काम समय से भुगतान ना होना मजदूरों के लिए सबसे बडी त्रासदी है। चंबल के क्षेत्र में कार्य करने वाले वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता संतोष कुमार ने कहा कि मजदूरों का पंजीयन ठीक से नहीं हो रहा है 100 दिन काम होने के बाद भी उनका पंजीकरण नहीं किया जा रहा है। ग्रामीण समुदाय की आजीविका के कार्य पदोन्नति में लगे अमरदीप असाटी ने कहा कि गांव के स्तर पर तत्काल रोजगार के अवसर बढाने की आवश्यकता है। आपदा बहुत बडी है इसके लिए सभी को आगे आना होगा। श्रमिकों को इससे उबारने के लिए आयोग को एक विशेष पैकेज तैयार करना चाहिए। मोहम्मद महताब ने कहा कि असंगठित क्षेत्र में जो लोग काम कर रहे हैं, उनके ऊपर सबसे अधिक संकट है उनके लिए जान बचाना मुश्किल है दूसरी तरफ आजीविका एक बडी चुनौती है।

बुंदेलखंड के प्रथम ऑक्सीजन बैंक का शुभारंभ

ऑक्सीजन बैंक मानवता की एक नई मिसाल शीतल प्रियदर्षी

कोरोना की दूसरी लहर में जिस प्रकार से ऑक्सीजन की कमी के कारण पीडित परिवार ऑक्सीजन के लिए बिलखते नजर आए, ऐसे में बुंदेलखंड के झांसी महानगर में परमार्थ समाज सेवी संस्थान और स्किल्ड इंडिया सोसाइटी एवं बी कैपिटल के संयुक्त प्रयास से ऑक्सीजन बैंक का शुभारंभ किया।

बुंदेलखंड में यह एक नई शुरुआत की गई। संकट के समय लोगों की मदद सच्ची मानव सेवा है। यह विचार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव जज शीतल प्रियदर्शी ने व्यक्त किए। आज स्किल्ड इंडिया के प्रशिक्षण केंद्र पर परमार्थ बी कैपिटल के संयुक्त तत्वाधान में बुंदेलखंड के प्रथम ऑक्सीजन बैंक के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उन्होंने कहा कि यह पुण्य का काम है समाज के सभी वर्गों को इसमें सहयोग करना चाहिए। इस अवसर पर परमार्थ के सचिव एवं जन जन जोडो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक डॉक्टर संजय सिंह ने कहा कि परमार्थ समाजसेवी संस्था द्वारा बुंदेलखंड के जालौन, झांसी, ललितपुर और छतरपुर में 28 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर स्वास्थ्य विभाग को उपलब्ध कराए गए हैं। जिनके माध्यम से करोना पीडितों को आसानी से ऑक्सीजन की उपलब्धता हो सके। इसी तरह गांव के संकटग्रस्त परिवारों को राशन किट उपलब्ध कराने का अभियान भी चलाया जा रहा है। साथ ही लोगों की क्रय शक्ति को बढाने के लिए झांसी, ललितपुर, टीकमगढ व छतरपुर के 70 गांव के 9000 लोगों को एक-एक सप्ताह का रोजगार उपलब्ध कराकर उनके खाते में 1500 रूपये डलवाए गए हैं। इसी तरह 131 गांव में कोरोना के प्रति जागरूकता हेतु जिंदगी ना मिलेगी दोबारा अभियान का आयोजन किया गया है।

जिसके तहत वैक्सीनेशन का काम किया जा रहा है। स्किल्ड इंडिया सोसाइटी के निदेशक नीरज सिंह ने कहा कोरोना के कठिन समय में जिस तरह से उन्होंने जरूरतमंदों को प्लाज्मा उपलब्ध करा कर अपने मानव होने का समाज के प्रति फर्ज अदा किया है उससे उन्हें आत्म-संतुष्टि मिलती है। इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने स्किल्ड इंडिया के परिसर में ऑक्सीजन बैंक का शुभारंभ किया है। यह ऑक्स. ीजन बैंक 24 घंटे खुला रहेगा जिसके लिए टोल फ्री नंबर 18005727274 जारी किया।

यह सेवा पूरी तरह से निशुल्क है। ऑक्सीजन कंसंट्रेटर ले जाने वाले लोगों के लिए अपने स्थानीय सभासद से संतुष्टि करवाना अनिवार्य है। अभी पांच ऑक्सीजन कंसंट्रेटर से बैंक शुरू किया गया है जिसे आवश्यकता के अनुसार बढाया जाएगा। इस अवसर पर अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार अनिल शर्मा ने कहा ऑक्सीजन की कमी के कारण जिन परिवारों ने अपनों को खोया है वह इसकी कीमत हमेशा समझ सकते हैं। इस नेक काम की शुरुआत झांसी में हुई है, जिसको जानकर वह उरई से चलकर अपने सहयोगी विकास गुप्ता के साथ झांसी में इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। अपने सहयोगी सहित इस अवसर पर परमा. र्थ संस्था के कार्यक्रम प्रबंधक शिवानी सिंह, सतीश चंद्र, मेहताब, मानवेंद्र, शैलेंद्र, उपेंद्र, उपासना, चाइल्डलाइन के कोऑर्डिनेटर अमरदीप बमोनिया, स्किल्ड इंडिया सोसायटी की टीम से जो इस ऑक्सीजन बैंक को सुचारू रूप से चलाने में सहयोग करेंगे उनमें मुख्य रूप से प्रतीक खरे, संजय गुप्ता, रश्मि, पवन, स्वाति, निर्मला यादव, पुनीत एवं रमेश आदि उपस्थित रहे।

वाटर ऑडिट के अनुसार ५५ लीटर के सापेक्ष आधे से कम मिल रहा झांसी वासियों को पेयजल

परमार्थ समाज सेवी संस्थान की टीम द्वारा झांसी शहर के अंतर्गत पेयजल संकट ग्रस्त 07 बस्तियों में पेयजल आंकेक्षणकिया गया। इस दौरान बस्ती के संकटग्रस्त 104 परिवारों का टीम ने साक्षात्कार किया। फोकस ग्रुप्स डिस्क. सन एवं मौके पर जाकर स्थिति आंकलन के द्वारा जानका. रियां प्राप्त कर पेयजल अध्ययन किया गया। इसमें पाया कि महानगर में प्रति व्यक्ति को 55 लीटर जल प्रतिदिन मिलने का अधिकार है। जबकि इससे आधा जल भी प्रति व्यक्ति को प्राप्त नहीं हो रहा है।

भले ही झांसी को बुन्देलखण्ड में सुविधाओं के तौर पर सबसे अच्छे शहर के नाम से जाना जाता हो लेकिन वर्षो से चली आ रही यहां पेयजल संकट की समस्या अभी भी खत्म नहीं हुयी है। जैसे ही फरवरी का माह शुरू होता है, शहर में पेयजल संकट उत्पन्न हो जाता है। महानगर की जनसंख्या 6 लाख के लगभग है। लोगों की प्यास बुझाने के लिए महानगर में पाइपलान सप्लाई के साथ 29 ट्यूबवेल लगे हैं और 3286 हैंडपंप है। पानी की आवश्यकता 78-51 एमएलडी की है, जबकि पानी की उपलब्धता 65.47 एमएलडी है। एक एमएलडी में 10 लाख लीटर पानी होता है। चूंकि पूरे शहर में पानी की पाइपलाइन नहीं डाली गई है और संकट ग्रस्त क्षेत्र की पाइप लाइन में पानी नहीं आ रहा है। इसलिए शहर में पेयजल संकट के समाधान के लिए जल संस्थान के द्वारा हैण्डपम्प तो लगाये गये है लेकिन गर्मियों में भूगर्भ जल स्तर कम होने के कारण एवं हैण्डपम्प से पानी की अधिक खपत होने के कारण हैण्डपम्प भी लोगों की प्यास नहीं बुझा पा रहे हैं। ऑडिट में पाया कि 55 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के अनुसार 674 व्यक्तियों को 37070 लीटर पानी की आवश्यकता है इन लोगो को मात्र 16095 लीटर पानी 43 प्रतिशत प्रतिदिन मिल रहा है जो सरकारी मानक के अनुरूप बहुत कम है।

महानगर के पूर्व में बेतवा नदी तथा पश्चिम में पहूज नदी मुख्य रूप से है। शहर में मिश्रित और लाल मिट्टी राकड पडुआ, जमींन है। भूमि के अन्दर 60 मीटर तक चिकनी मिटटी और कंकड है इसके बाद ग्रेनाईट पत्थर मिलता हैं। क्षेत्र में प्रमुखता से डगवेल और ट्यूबवेल पेयजल के संसाधन है। डगवेल की गहराई 5.50 –25 मीटर और ट्यूबवेल 50 –100 मीटर गहराई पर स्थापित है। जिनमे जल स्तर बहुत तेजी से नीचे जा रहा है। झांसी शहर के अन्दर पूरे एरिया की जमींन में पत्थर है इसलिए साधारण वोर कराना मुश्किल है।

वर्तमान में महानगर के 20 मुहल्लों (लक्ष्मण गंज, बिसात खाना, दारीगरन, अलीगोल खिडकी बहार, दतिया गेट बहार, उन्नाव गेट बहार, बडा गांव गेट बहार, मुकरयाना, बांग्ला घाट, गुदरी, गुमनावारा, नगरा, सीपरी बाजार, मसीहागंज, ग्वाल टोली, चार खम्बा, सराय, राजगढ, भाडेर गेट बाहर,सत्यम कॉलोनी, अन्नपूरना कॉलोनी) में पानी की किल्लत बढती जा रही है। लोगो का यह भी कहना है 1992 के बाद शहर में स्थापित पानी वाली धर्मशाला के पुराव हो जाने से जल स्तर गिरने की समस्या बढ गयी है। लोगो के घरो में पाइप लाइन कनेक्शन है मगर कई सालो से पानी नहीं आ रहा है मगर जल संस्थान द्वारा 1200 रू वार्षिक बिल बरावर भेज रहा और लोग जमा भी कर रहे है। वहीं असमय टैंकरों का आना लोगों की मुसीबत बना हुआ है।

कैच द रैन को सफल बनाने के लिए परमार्थ ने ग्राम प्रधानों को दिया प्रषिक्षण

बुन्देलखण्ड की वर्षा की एक-एक बूंद को सहेजना आवश्यक

22 मार्च को भारत के प्रधानमंत्री ने ''कैच द रैन'' अभियान की शुरूआत पूरे भारतवर्ष के लिए की है। इस अभियान का उददेश्य भारत में अधिक से अधिक वर्षा के जल को संरक्षित करना है। जिसके लिए प्रधानमंत्री कार्यालय से लेकर जल शक्ति मंत्रालय ने लॉकडाउन के दौरान देश के समस्त जिलाधिकारियों को इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए लगातार निर्देशित किया है। बुन्देलखण्ड को इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए परमार्थ के प्रमुख संजय सिंह को रिजनल कॉर्डिनेटर लिए भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के अपर सचिव अशोक कुमार ने जिम्मेदारी दी है। इस क्रम में नवनिर्वाचित ग्राम प्रधानों को परमार्थ समाज सेवी संस्थान ने आज इस कार्यक्रम के उददेश्य, गाइड लाइन आदि को विस्तार से समझाया। ग्राम प्रधानों को मनरेगा एवं 15वें वित्त आयोग से बरसात से पहले अपने गांव के जल संसाधनों को पुनर्जीवित करने का आवाहन किया। वर्षा की एक-एक बूंद वाटरशेड के कॉन्सेप्ट के तहत सहेजने का तरीका बतया गया।

श्री सिंह ने कहा कि 20 जून को मानसून आने की सम्भावना है, 20 दिन से भी कम समय बचा है ऐसे में पंचायतें शीघ्रता से अपने गांव में कैच द रैन कार्यक्रम को जमीन में उतारने मेंल ग जाये। परमार्थ के संयोजक सतीश चन्द्र ने कहा कि जो तालाब में इनलेट, आउटलेट पानी आने के रास्ते अवरूद्ध है, इनको ठीक कर लिया जाये, क्षतिग्रस्त संरचनाओं की मरम्मत कर ली जाये और उनकों जल भरण के लिए तैयार कर लिया जायें। वैसे भी कोरोना महामारी के कारण इस बार जल संचयन के कार्य प्रभावित हुये है, और इन्हीं जल सं. रचनाओं के ऊपर पीपल, बरगद, नीम, पाखड के पेड लगाये जाये। साथ ही घर के आस-पास बेकार पडी जमीन में तुलसी वाटिकायें निर्मित की जाये। इन संरचनाओं में पेड लगाने और तुलसी वाटिकाओं के लिए पौधें और बीज की व्यवस्था परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा की जायेगी। कोरोना में गृह वाटिकाऐं काफी कारगर साबित हुयी है।

इस अवसर पर ग्राम प्रधानों को हैवरे बाजार, महाराष्ट्र की फिल्म भी दिखायी गई। इस कार्यशाला में लगभग 1 दर्जन ग्राम प्रधानों ने सहभागिता दिया, श्रवनदास, सरमऊ, अर. विन्द्र कुमार, पाली, सीताराम अहिरवार, मवई, बृजकिशोर, पिछोरा खुर्द, धीरेन्द्र राजपूत, बहटापालर, श्याम जी रौनिजा, विद्यादेवी पठारी, रोहित यादव सिमरा प्रमुख रूप से उपस्थित हुये। इस अवसर पर परमार्थ के मनोज, सुषमा, महताब आदि विशेष रूप से उपस्थित हुये।

लोगों को मदद के साथ आत्मनिर्भर बनाना ही हमारा उद्देश्य

कोरोना काल मे पूरे विश्व के करोडों परिवार तबाह हुए हैं। कुछ बेरोजगारी की, कुछ गरीबी की और कुछ इस बीमारी की भेंट चढे। कोरोना को लेकर लोगों के मन में तरह तरह की भ्रांतियां फैली है। पहले लॉकडाउन में लोग कोरोना से डरे हुए थे और दूसरे लॉकडाउन में लोग वैक्सीन को लेकर खौफ पाले हुए थे। जो भी हो पर इन सब में गरीब और निचले तबके के लोग बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। रोज के कमाने खाने वालों पर जैसे पहाड टूट पडा। लॉकडाउन के चलते उनसे रोजी-रोटी का साधन छिन गया। जुडा रखा पैसा कितने दिन तक चलता, जब पैसा खत्म होने लगा तो लोगों की चिंताएं बढने लगी। दो जून की रोटी के लिए अब उनको साहूकार के पास पैसा मांगने जाना पडता था। लेकिन साहूकार भी कितने दिन तक और कितना पैसा उधार देते। साहूकारों ने भी जब पैसा उधार देना बंद कर दिया तब उनके माथे की लकीरें बढने लगी। परमार्थ समाजसेवी संस्थान ने कोरोना काल में ऐसे ही लोगों को संभालने का कार्य किया जो कोरोना वायरस और लॉकडाउन की वजह से तबाह हो गए थे। संस्था की परियोजनाओं के तहत लोगों को राहत देने और उनको आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया गया।

पोषण वाटिका के जरिए लोगों को स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया गया।

महेशगढ की अनीता अपने पति और दो बच्चों के साथ कोरोना काल में कुछ दिन भूखे भी रहे। क्योंकि लॉकडाउन में मजदूरी तो मिल नहीं रही थी। जैसे तैसे कुछ दिन तो गुजारा कर लिया लेकिन फिर यहां वहां से पैसे उधार लेकर घर चलाना पड रहा था। तभी परमार्थ समाज सेवी संस्थान के कार्यकर्ताओं ने पोषण वाटिका के बारे में बताया। संस्था की ही तरफ से उनको सब्जियों और फलों के बीज भी दिये। अनीता ने अपने घर के बाहर एक छोटा सा बगीचा बनाया। वहीं बाहर सब्जियां उगाना षुरू कर दिया। संस्था की तरफ से ही उनकी इस पोषण वाटिका के चारों तरफ ग्रीन नेट भी लगवा दी गई। इससे उनका पोषण आहार भी सही हुआ। साथ ही साथ उनको आय का स्त्रोत भी मिल गया। अब वे अपने परिवार का गुजारा मजदूरी ना मिलने पर सब्जियां बेचकर कर लेती हैं। फल और ताजी सब्जियां अपने आहार में शामिल करने से अब उनके परिवार के स्वास्थ्य में भी काफी सुधार आया। अनीता ने अब बगीचे का आकार बडा करने का फैसला कर लिया है। आज अनीता इसी बगीचे के सहा. रे अपने बच्चों को भी शिक्षा भी दिला रही हैं।

बकरी पालन के जरिए परिवार की आमदनी बढी

तालबेहट के तलउआ गांव की बबीता के पति मजदूरी के बाहर जाते थे और बबीता यहीं रहकर खेतों में काम करके परिवार का गुजारा करती थी। अचानक से आई इस महामारी ने लाखों लोगों की तरह इनके भी रोजरोटी के साधन छीन लिए। परमार्थ समाजसेवी संस्थान कोरोना काल में ऐसे ही लोगों की मदद कर रही थी। आर्थिक तंगी के चलते जब इनका परमार्थ के सदस्यों से मिलना हुआ तो संस्था द्वारा उनको अजीविका परियोजना के महिला समृद्धि कार्यक्रम से जुडने का प्रस्ताव दिया गया। बबीता ने परिवार का इस परियोजना के तहत उनको 2 बकरी सौंप बकरी पालन का कार्य शुरू कराया गया। इससे बबीता को साहूकार से आर्थिक मदद भी नहीं मांगनी पडती। ना ही अपनी जमीन गिरवी रख पैसों की जुगाड कर घरवालों की जरूरत पूरी करनी पडती है। अब वे परमार्थ की मदद से आत्मनिर्भर हैं। आज उनके पास 2 बडी बकरी और 3 छोटी बकरी हैं। जिससे उनके परिवार का खर्चा बडी आसानी से चला रही हैं। बकरी के उपचार के लिए पशु सखी से मदद भी मिल जाती है।

सोना ने सवर्ण जाति से भिडकर अपने नाम की जीत

जालौन के विकासखंड माधौगढ के बीहड क्षेत्र में बसे मचकछा ग्राम में पाल जाति के परिवार निवास करते हैं। राजनीतिक असक्रियता के कारण पंचायत चुनाव में इस गांव का कभी कोई भी व्यक्ति प्रधान पद प्राप्त नहीं कर पाया था। असहना ग्राम पंचायत के अन्तर्गत सामान्य जाति के लोग रहते हैं। यहां आरक्षित सीट के अलावा अनारक्षित सीट पर चुनाव लडना काफी चुनौती भरा काम है। 40 वर्षीय सोना अपने पति बलवीर पाल और 2 बच्चों के साथ रहती हैं। गांव में फसल खराब हो जाने के कारण उन पर कर्ज बढ गया था, इसलिए वे परिवार सहित गांव छोडकर भाग अहमदाबाद चले गए थे। कोरोना के चलते लगे लॉकडाउन ने उनसे रोजगार छीन लिया। वे परिवार सहित वापस आ गए। सोना त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में ग्राम प्रधान प्रत्याषी के रूप में सामने आई। 6 पुरूष प्रत्याशियों से लडना जो पैसों व ताकत में उनसे अधिक मजबूत हैं काफी जोखिम भरा भी रहा, क्योंकि उन्होनें हर तरह से उन पर दबाव बनाकर उनको रोकने का प्रयास किया। सोना के इरादे कोई किसी भी तरह नहीं हिला पाए। सोना से पूरी ईमानदारी से लुभावने वादे ना करते हुए चुनाव लडा। सवर्ण वर्ग के प्रत्याशी से सीधे टक्कर लेते हुए सेना 193 मत पाकर 11 वोट से जीत पाल समुदाय से अपने गांव की पहली प्रधान बनी।

बाहुबलियों से भिड बीडीसी पद जीतकर आई राजकुमारी

आजकल चुनाव सिर्फ पैसों का खेल हो गया है। धनवान और बाहुबली चुनावी मैदान को अपनी पुश्तैनी जागीर समझते हैं। अपने से कमतर लोगों को चुनावी मैदान में आने नहीं देते, जो आ जाए उसे डरा धमका या लालच देकर बैठा देते हैं। ईमानदारी से चुनाव तो जैसे आज की सदी में सिर्फ एक भ्रम ही है। जिला झांसी के विकासखंड बबीना के ग्राम संतपुर कोटि की जल सहेली राजकुमारी इस बार ग्राम पंचायत चुनाव में उतरी। राजकुमारी सिर्फ कक्षा 5 तक ही पढाई की हैं। दो बच्चों की मां घर-गृहस्थी के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी राजकुमारी परमार्थ समाजसेवी संस्थान के वॉश परियोजना के तहत चयनित की गई थी। उसके बाद उन्होने पानी पंचायत समिति बनाई, साथ ही प्रशिक्षण ने. तृत्व विकास, जल सहेली सम्मेलन, जागो मतदाता जागो जैसे कार्यक्रमों में शामिल होने से उनका आत्मविष्वास बढा। तब उन्होने चुनाव में आने का फैसला किया। उनके गांवों के अन्य प्रत्याशियों ने उनको कई गलत तरीकों से रोकने का प्रयास किया। राजकुमारी के इरादे कमजोर नहीं पडे। उनके सामने पैसों की चुनौती थी, अन्य धनवान प्रत्याशी मतदाताओं को पैसे के दम पर लुभाते रहे। राजकुमारी ने अपने उसूलों पर रहते हुए सिर्फ बुनियादी जरूरतों को मुद्दा बनाकर चुनाव लडा। लोगों को पानी का मोल समझाते हुए उनसे वोट की अपील की। उनका कहना था कि अभी तक वे अपनी समस्याओं को लेकर सिर्फ अपने गांव तक ही सीमित थी। अब वे जिला स्तर पर इन समस्याओ को हल करेंगी। आखिर में उनकी लगन और ईमानदारी ने लोगों के मन में जगह बना ली। मतदाताओं ने उनकी सच्चाई पहचानते हुए उनको खुले दिल से वोट कर बीडीसी पद पर जीत दिलाई।

घर-घर जाकर किया वैक्सीनेशन के लिए जागरूक

बढते कोरोना के मामलों को देखते हुए परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा जिंदगी ना मिलेगी दोबारा वैक्सीनेशन अभियान शुरू किया गया। जिसके तहत घर-घर जाकर लोगों को वैक्सीनेशन और कोरोना के प्रति जागरूक करना शुरू किया। लोगों के मन में कोरोना वायरस और वैक्सीनेशन को लेकर कई प्रकार की भ्रांतियां थी। संस्था के सदस्यों का कहना था कि लोग वैक्सीनेशन को लेकर खौफ में थे। वैक्सीन को लेकर उनके मन में बहुत से सवाल थे। लोग वैक्सीन लगवाने से भी डर रहे थे, यहां तक कि जो लोग उनसे वैक्सीन लगवाने का कहते उनको भी वो भगा देते। लोगों के मन में कोरोना की भ्रांतियां इस हद तक फैली थी कि वे किसी की अच्छी बात मानना तो दूर सुनना भी नहीं पसंद कर रहे थे। संस्था के सदस्य व वॉलेंटियर गांव मे पहले ही जल व अन्य समस्याओं पर काम कर चुके हैं। गांववासियों के मन में संस्था और संस्था के सदस्यों की इज्जत और उन पर भरोसा था। इसी भरोसे के चलते उन्होंने संस्था के सदस्यों की बात सुनी भी और मानी भी। सात दिन तक चले इस वैक्सीनेषन जागरूकता अभियान से प्रेरित होकर सैकडो लोगों ने वैक्सीनेशन कराया। कोरोना के प्रति जागरूक हुए, मास्क लगाना और सामाजिक दूरी का पालन करना शुरू कर दिया।

रानी की समझदारी और जुझारूपन ने कोरोना संक्रमण से गांव को बचाया

जिला झांसी के बबीना विकासखंड के ग्राम ढिकौली के 370 परिवारों कों रानी ने अपने प्रयासों से बचाया। कृशि और मजदूरी करके अपना गुजारा करने वाले ढिकौली के निवासी दूसरी लहर से प्रभावित होने लगे। पंचायत चुनाव के दौरान रैलियों में हुई लापरवाहियों ने गांव तक कोरोना के वायरस को पहुंचा दिया। लगातार बढ रहे खांसी, जुकाम और बुखार के मरीजों ने लोगों को डरा दिया था। कोरोना के प्रति फैली भ्रांतियो और अंधविश्वास की वजह ने इनका फैलना बहुत तेजी से होने लगा था। परमार्थ समाजसेवी संस्थान ने 26 अप्रैल से कोरोना जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। जिसमें घर-घर जाकर गांववासियों को कोरोना के प्रति जागरूक किया साथ ही पोस्टर व पेम्पलेट के जरिए जानकारी दी। 28 वर्षीय रानी ने इस अभियान से जुडकर लोगों को नियमित हाथ की सफाई करना, सामाजिक दूरी बनाए रखना, मास्क लगाए रखना, कोरोना जांच करवाना और वैक्सीनेशन करवाने जैसे महत्वपूर्ण संदेश लोगों तक पहुंचाए। उनका व संस्था का यह प्रयास सफल भी हुआ। गांव के 70 लोग जिन्होंने जरा सी बीमार होने पर तुरन्त कोरोना की जांच करा ली। 55 लोगों ने जागरूकता अभियान से प्रेरित होकर वैक्सीनेशन करवाया। गांव में पहले जो 250 लोग संक्रमित थे, उनकी संख्या संस्था के जागरूकता अभियान के द्वारा हुए प्रयास के बाद मात्र 47 रह गई। महामारी गांव में भयानक रूप नहीं ले पाई। रानी के प्रयास ने उनके परिवार के सभी सदस्यो को संक्रमण की चपेट में आने से बचा लिया।

अब बाढ़ से जूझता बुंदेलखंड

भीषण सूखे का सामना करने वाले बुंदेलखंड के अधिकांश गांव अतिवृष्टि से त्रस्त हैं। यह भी जलवायु परिवर्तन का ही नतीजा है।

अब बाढ़ से जूझता बुंदेलखंड

भीषण सूखे का सामना करने वाले बुंदेलखंड के अधिकांश गांव अतिवृष्टि से त्रस्त हैं। यह भी जलवायु परिवर्तन का ही नतीजा है।

संजय सिंह — आपदा

सूखे और अकाल का पर्याय बन चुके बुंदेलखंड में किसानों के लिए खेती सबसे जोखिम भरा उपक्रम है। यहां के किसान लगातार सूखे और बेमौसम बारिश और अन्य आजीविका के अभाव में केवल मजबूरी में खेती करते हैं। अधिक पठारी क्षेत्रों वाले बुंदेलखंड का भूगोल ऐसा है कि वर्षा का पानी पठारों से नीचे की ओर तेजी से बहता है। इस स्थिति को समझते हुए वनों की रक्षा और तालाबों व अन्य जलस्रोतों के निर्माण पर पहले ध्यान दिया गया, पर हाल के दशकों में इसकी उपेक्षा हुई। जलवायु परिवर्तन की दोहरी मार झेलते इस इलाके में जुलाई के अंत तक भीषण सूखे का संकट झेलने वाले अधिकांश गांव इन दिनों अतिवृष्टि से त्रस्त हैं। इस वर्ष बुंदेलखंड में भारी बारिश हो रही है, पिछले साल के 372 मिलीमीटर की जगह इस साल अगस्त के दूसरे सप्ताह तक औसत 1,072 मिलीमीटर वर्षा हुई है। यह पिछले दो दशकों का कीर्तिमान है। सूखे के बाद इतनी

जल्दी बाढ़ के संकट को बिगड़ते पर्यावरण, खासकर वनों के विनाश, अनियंत्रित खनन, नदियां से रेत खनन तथा परंपरागत जलस्रोतों के ह्रास से जोड़कर देखा जा सकता है। बुंदेलखंड का यह संकट नया नहीं है। अगर ध्यान से देखें, तो यह लंबे समय से प्राकृतिक पर्यावरण की उपेक्षा करके अपनाए गए विकास मॉडल की वजह से उत्पन्न दीर्घकालीन जलवायु परिवर्तन का नतीजा है।

इसके लिए किए जाने वाले तात्कालिक उपाय नाकाफी हैं। उदाहरण के लिए, पिछले कुछ वर्षों में वृक्षारोपण व तालाब खोदने को बढ़ावा दिया जा रहा है, पर जमीनी स्तर पर कथनी और करनी में बहुत फर्क है। जालौन क्षेत्र में 400 बंधिया बनाई गई थीं। इनमें से आधी से ज्यादा तबाह हैं। ललितपुर जिले में जल संरक्षण के लिए तीन करोड़ रुपये से चल रहा काम निरर्थक हो चुका है। इसी इलाके में बादहा और रसिन बांध के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च हुए, लेकिन नतीजा शून्य रहा। बुंदेलखंड का जालौन जिला जो खेती की दृष्टि से सबसे उपयुक्त है, इसे बुंदेलखंड का पंजाब भी कहा जाता है। यहां पर पांच नदियां-यमुना, चंबल, सिंध, कुमारी और पहुज आकर मिलती हैं। आज यह पंचनद का पूरा इलाका बाढ़ का सामना कर रहा है। बेवक्त बारिश ऐसी तबाही मचा रही है कि दलहन-तिलहन के किसान बर्बादी के कगार पर पहुंच गए हैं। जिन किसानों ने कर्ज लेकर तिल, मूंगफली, उड़द, मूंग की बुआई की थी, उनका मूलधन भी डूब रहा है। इसी अगस्त माह की शुरुआत के दिनों में राजस्थान तथा मध्य प्रदेश में हुई भारी बारिश के कारण अपने क्षेत्रों में बाढ़ को रोकने और बढ़ते जल स्तर को नियंत्रित करने के लिए राजस्थान के कोटा स्थित बैराज के 10 गेट खोलकर 80 हजार क्यूसेक पानी की निकासी की गई। नतीजतन चंबल नदी के जल स्तर में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण चंबल तथा इसकी सहायक नदियों-सिंध, काली सिंध एवं कूनो के निचले इलाकों में बाढ़ के हालात उत्पन्न हो गए। चंबल में आई बाढ़ ने राजस्थान के कोटा, धौलपुर तथ मध्य प्रदेश के मुरैना व भिंड आदि जिलों से होते हुए उत्तर प्रदेश के जनपद जालौन को भी अपनी चपेट में ले लिया। कुठांद, महोबा तथा कालपी क्षेत्र के लगभग 60 से अधिक गांवों में बाढ़ ने भीषण तबाही मचाई है। बुंदेलखंड के जालौन, झांसी, बांदा, हमीरपुर एवं ग्वालियर-चंबल इलाके के अशोकनगर, गुना, शिवपुरी, श्योपुर, मुरैना, भिंड सबसे ज्यादा बाढ़ से प्रभावित हुए हैं। इन सभी जिलों की छह लाख हेक्टेयर जमीन की खेती को नुकसान हुआ है।

यही नहीं, गांव वालों को बाढ़ का अंदेशा न होने के कारण अनेक परिवार फंस गए। प्रशासन को सेना की भी सहायता लेनी पड़ी। सेना ने बाढ़ में फंसे हजारों लोगों को सुरक्षित निकाला। बुंदेलखंड में अनेक वर्षों से किसानों के लिए प्रतिकूल मौसम नजर आ रहा है। क्षेत्र के अधिकांश जिलों में तिल की फसल 100 प्रतिशत, जबकि उड़द, मूंग की फसल 80 प्रतिशत से अधिक खराब हो गई है। दुखद है कि इतनी क्षति होने पर भी किसानों को बीमा राशि नहीं मिलती। बुंदेलखंड में स्थानीय पर्यावरण के अनुकूल जल संरक्षण और संचयन की दीर्घकालीन योजना बनाने की जरूरत है।

- लेखक जल जन जोड़ो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक हैं।

इस वर्ष बुंदेलखंड में भारी बारिश हो रही है, पिछले साल के 372 मिलीमीटर की गजह इल साल अगस्त के दूसरे सप्ताह तक औसत 1,072 मिलीलीटर वर्षा हुई है। यह पिछले दो दशकों का कीर्तिमान है। सूखे के बाद इतनी जल्दी बाढ़ के संकट को बिगड़ते पर्यावरण, खासकर वनों के विनाश, अनियंत्रित खनन, नदियां से रेत खनन तथा परंपरागत जलस्रोतो के ह्रास से जोड़कर देखा जा सकता है।

जल जन जोडो अभियान के बारे में

जल-जन-जोडो अभियान जल निकायों, नदी पुनर्जीवन, जल संरक्षण, पर कार्य करने वाला राष्ट्रव्यापी अभियान है। जिसका मुख्य उददेश्य पारम्परिक जल स्रोतों के संरक्षण, नदी पुर्नरुद्धार और जन सुरक्षा जैसे मुददे है। विगत 08 वर्षों में जल-जन-जोडो अभियान का प्रमुख उददेश्य राष्ट्रीय स्तर पर जल अधिकार कानून का निर्माण करना और नदी पुनर्जीवन के कार्यो को बढावा देना है। समाज के विभिन्न घटकों को जोड़ कर भारत को दुष्काल मुक्त बनाना अभियान का परम ध्येय है। 1500 से अधिक संस्थाये, व्यक्तिओ, 16 विश्वविद्यालय एवं तकनीकी संस्थाओ का अभियान से जुडाव है।

कार्यलय का पता– नजा हॉस्पिटल के पास दूसरी गली, शिवाजी नगर, झांसी (उ. प्र.)

Email: jaljanjodoabhiyan@gmail.com, parmarths@gmail.com

Website: www.parmarthindia.com

Phone: 0510-2321051 Mobile: 7054435087

घोषणा : इस न्यूज लेटर का प्रकाशन जल-जन-जोडो अभियान द्वारा किया जा रहा है। इस पत्रिका में प्रकाशित लेख-विचार लेखकों के है। इन विचारों से बीएमजेड तथा वेल्टहंगरहिल्फे का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।